पंजीयन संख्या : 68939/98 अंक - 26, वर्ष 24

ज्ञान तत्व

समाज शास्त्र | अर्थ शास्त्र | धर्म शास्त्र | राजनीति शास्त्र

339

-: सम्पादक :-
बजरंग लाल अग्रवाल
रामानुजगंज (छ.ग.)
सत्यता एवं निष्पक्षता का निर्भीक पाक्षिक

पोस्ट की तारीख 01.01.2024
प्रकाशन की तारीख 16.12.2023
पाक्षिक मूल्य - 2.50/- (दो रूपये पचाय पैसे)

''शराफत छोड़ो, समझदार बनो''

''सुनो सबकी, करो मन की''

''समस्याओं के प्रणेता, कर कानून नेता''

''समाधान का आधार ज्ञान यज्ञ परिवार''

''चाहे कोई अत्याचार, नहीं करेंगे नही सहेंगे''

''हमें सुराज्य नही, स्वराज्य चाहिए''

इस्राइल हमास युद्ध पर एक नजर:

आज इज़राइल हमास युद्ध की दुनिया भर में चर्चा हो रही है। मैं बचपन से ही लिखता आ रहा हूँ कि इस्लाम दुनिया का सबसे अधिक सांप्रदायिक और खतरनाक संगठन है। सांप्रदायिकता को कभी भी संतुष्ट नहीं किया जा सकता। सांप्रदायिकता का एकमात्र समाधान उसे कुचलना ही है। इसाईयत दुनिया की सबसे अधिक मानवतावादी संस्था है और इसाईयत ही सांप्रदायिकता को कुचलने में सबसे बड़ी बाधा है। हिंदू और यहूदी इस मामले में पूरी तरह संतुलित माने जाते हैं। वर्तमान वातावरण में हिंदू, ईसाई और यहूदी एकजुट होते जा रहे हैं। स्पष्ट है कि बुद्धि और नम्रता एकजुट हो गए हैं और डंडे से मजबूत है। इस युद्ध में हमेशा की तरह बुद्धि और मानवता जीतेगी डंडा कमजोर रहेगा। मैं मानता हूँ कि मुसलमान इस लड़ाई के बाद भी हार मानने वाला नहीं है। इस्लाम को मानने वाला समाप्त भले ही हो जाए लेकिन हार नहीं मानता फिर भी यह बात स्पष्ट है कि सांप्रदायिकता को कुचलने में धीरे- धीरे दुनिया अधिक एकजुट हो रही है।

इस युद्ध को विश्व युद्ध का रूप ग्रहण करने की कोई संभावना नहीं है क्योंकि पहली बात यह है कि भारत ने इस मामले में तत्काल और साफ-साफ स्टैंड लिया है। भारत के कदम में किसी तरह के भ्रम की गुंजाइश नहीं है। दूसरी बात यह है कि साम्यवादी देश भी यह समझ रहे हैं कि युद्ध की शुरुआत इजराइल ने नहीं बल्कि हमास ने की है। हमास ने हीं इजराइल में घुसकर सामान्य लोगों को मारा है तथा बंधक बनाया है। तीसरी बात यह है कि पश्चिमी देश इस युद्ध को मुसलमान और इसाईयत में बदलते हुए नहीं देखना चाहते। पश्चिमी देशों का यह मानना है कि मुसलमान और कम्युनिस्ट को एकजुट करने से खतरा बढ़ सकता है। ईरान बहुत चाहता है की लड़ाई मुस्लिम देशों और इजरायल के बीच हो लेकिन पश्चिमी देश पूरी कोशिश कर रहे हैं कि युद्ध में फिलीस्तीन और हमास को अलग-अलग रखा जाए। एक होना किसी भी दृष्टि से ठीक नहीं है। इसलिए मेरा यह मत है कि कम्युनिस्ट देश और पश्चिम के इसी देश बहुत सावधान है। मेरे विचार से विश्व युद्ध के कोई लक्षण नहीं दिखते हैं।

लगभग ढाई हजार वर्ष पहले दुनिया में दो ही धर्म माने जाते हैं सनातन और यहूदी दोनों की सोच में भी बहुत समानता थी। दोनों राष्ट्र को धर्म के साथ नहीं जोड़ते थे। यहूदी भी हिंदुओं के समान ही समाज को ऊपर मानते थे। इसलिए यहूदियों ने भी पूरी दुनिया के यहूदियों को यह संदेश दिया था कि जिस भी देश में रहो उस देश के कानून का पालन करो हिंदुओं ने भी यही संदेश दिया था कि कभी धर्म के आधार पर

राष्ट्र बनाने की चिंता मत करो अपनी संख्या बढ़ाने की चिंता मत करो लेकिन हिंदुओं में से निकले बौद्ध जिन्होंने संख्या बढ़ाने की चिंता की। यहूदियों में से निकले इसाइ और मुसलमान जिन्होंने संख्या बढ़ाने की चिंता की जिन्होंने अपना राष्ट्र बनाने की चिंता की। वर्तमान समय में इजरायल और हमास का जो युद्ध चल रहा है इस युद्ध में भी अनेक यहूदी ऐसे हैं जो मानते हैं कि इजरायल गलत है क्योंकि यहूदियों को किसी राष्ट्र के लिए नहीं लड़ना चाहिए। जो लोग इजरायल के साथ संघर्ष कर रहे हैं उन्हें जायनाबाद कहकर अनेक यहूदी उनसे अलगाव कर रहे हैं। यहां तक कि इजराइल में भी यहूदी लोग इस संघर्ष के विरुद्ध आंदोलन कर रहे हैं। मैं यहूदियों की इस धारणा को बहुत अच्छा मानता हूं और मुसलमान को पूरी तरह से गलत मानता हूँ। जिन्होंने राष्ट्र को ही धर्म के साथ जोड़कर सारी दुनिया को परेशान कर दिया है। धर्म को कभी भी राज्य के साथ जोड़ने की कोशिश नहीं करनी चाहिए।

मैं हिंदुओं को सबसे अच्छा और उसके बाद ईसाइयों को। ईसाइयों के बाद यहूदियों को और सबसे खराब इस्लाम को मानता हूं। मैंने यह बात कई बार लिखी भी है। मेरे एक मित्र ने मेरे लिखे के उत्तर में यह लिखा की सबसे खराब यहूदी होते हैं क्योंकि यहूदियों ने यीशु मसीह को फांसी दे दी। यहूदियों ने सारी दुनिया को परेशान किया यहूदी जहां भी रहते हैं वहां कभी शांति से नहीं रहते यहां तक कि यहूदियों की बदमाशी के कारण ही हिटलर ने यहूदियों को मार कर भगाया था। मैं हिटलर को अच्छा नहीं मानता। यहूदियों के साथ हिटलर ने अन्याय किया था। मैं अभी तक कहीं नहीं सुना कि यहूदी जहां भी रहते हैं वहां किसी भी प्रकार से हिंसा करते हो बल प्रयोग करते हो या अत्याचार करते हो। यह अवश्य है कि बुद्धि के मामले में यहूदी तेज होते हैं बहुत जल्दी तरक्की करते हैं और इसलिए दूसरे लोगों को कुछ कष्ट होता है। लेकिन यह कोई अत्याचार नहीं है मैं फिर से लिखना चाहता हूं कि जो लोग हिटलर के प्रशंसक हैं वे मेरे विचार से गलत है। मैं अब भी यहूदियों को मुसलमान की तुलना में अधिक शांत समझता हूं।

हम दो दिनों से यहूदी और इस्लाम की चर्चा कर रहे हैं। आज इस चर्चा का समापन होगा। मेरे एक मित्र ने कल मुझे फोन करके बताया कि इसराइलियों के पास कहीं घर नहीं था तो फिलिस्तीनियों ने उन्हें अपने क्षेत्र में शरण दी थी। मैं उनकी बात से सहमत नहीं हूं क्योंकि फिलिस्तीन भी पहले यहूदी ही थे जिस क्षेत्र को फिलिस्तीन अपना बता रहे हैं वह **2000** वर्ष पहले यहूदी क्षेत्र था। उस यहूदी क्षेत्र में फिर मुसलमान आए और मुसलमान ने धीरे-धीरे उसे यहूदी क्षेत्र पर कब्जा कर लिया। बाद में यहूदी लोग पुनः उन क्षेत्रों में आकर के रहने लगे। दूसरी बात मेरे मित्र ने यह कही कि हम सब लोग तो फिलीस्तीन के पक्ष में है क्योंकि फिलीस्तीन को स्वतंत्र होना ही चाहिए। मैं उनसे

प्रश्न किया कि फिलीस्तीन पर कोई आक्रमण नहीं हुआ है। फिलिस्तीनियों पर भी कोई आक्रमण नहीं हुआ है आक्रमण हमास पर हुआ है और हमास ने जाकर इसराइल पर पहले आक्रमण किया है इसलिए फिलिस्तीन की लड़ाई है ही नहीं। फिलिस्तीन हमास हिज्बुल्लाह होती इन सबको एक मान लेना फिलिस्तीनियों की बदमाशी है वास्तविकता नहीं। हमास फिलिस्तीनियों का प्रतिनिधित्व नहीं करता बल्कि एक आतंकवादी संगठन है। मेरा फिर से सुझाव है कि हम सब लोग इन सब मुद्दों पर गंभीरता से विचार करें। याद रखिए कि हमास बहुत छोटा सा संगठन है और फिलिस्तीन एक देश है और फिलिस्तीन के साथ कोई लड़ाई नहीं हो रही है।

आतंकवाद का उन्मूलन जरुरी:

समाचार मिल रहे हैं कि भारत सरकार ने मुस्लिम आतंकवादियों से निपट लेने के बाद अब खालिस्तानी आतंकवादियों पर योजनाबद्ध आक्रमण किया है। लगभग **6** महीने से बहुत सोच- समझकर इस योजना पर काम किया गया जिसके अंतर्गत कनाडा से लेकर पंजाब तक में बहुत हलचल देखी जा रही है। मैं लगातार अनुभव कर रहा हूँ कि भारत सरकार हर मामले में सोच- समझकर निर्णय कर रही है और विपक्षी दल सारे निर्णय गलत ले रहे हैं। यदि मणिपुर में भी सोचा जाए तो भी विपक्षी दलों का रवैया समाज विरोधी ही माना जा सकता है। साथ ही खालिस्तान और मुस्लिम आतंकवाद के विषय में भी विपक्षी दलों का रवैया ठीक नहीं है। वर्तमान भारत में नरेंद्र मोदी और मोहन भागवत मिलकर जो सरकार चला रहे हैं वह ठीक दिशा में जा रही है और हम सबको खुलकर राजनैतिक मामलों में इस सरकार का समर्थन करना चाहिए।

पाकिस्तान में एक ऐसे व्यक्ति की हत्या हो गई है जिसने पहले भारत में बहुत आतंक मचा रखा था और जाकर पाकिस्तान में रहने लग गया था। पिछले कुछ वर्षों में ऐसे छिपे हुए सिख और मुस्लिम आतंकवादियों की हत्याएं आमतौर पर हो रही हैं। यह हत्याएं अपने आप हो रही हैं अथवा इसमे नरेंद्र मोदी सरकार का हाथ है यह अभी तक रहस्य बना हुआ है। सच बात तो यह है कि इसमें मोदी सरकार का हाथ होने का अब तक कोई प्रमाण नहीं मिला है लेकिन यदि अप्रत्यक्ष रूप से ऐसा होता भी है जैसा संदेह कनाडा सरकार ने व्यक्त किया है अथवा यदा कदा पाकिस्तान भी ऐसे आरोप लगाते रहता है। यदि यह इन आरोपों में गुप्त रूप से कोई सच्चाई भी है तो इसके लिए नरेंद्र मोदी सरकार बधाई के पात्र ही है, आलोचना के नहीं। क्योंकि जो वहां मारे गये हैं वह आतंकवादी थे। दूसरे देशों में षड्यंत्र कर रहे थे और यदि नरेंद्र मोदी ने ईश्वर से या कुछ अन्य लोगों से प्रार्थना की जिसके परिणाम स्वरुप वह मारे गए तो इसमें नरेंद्र मोदी की गलती क्या है? मैं यह समझता हूं कि उन देशों ने जिन्होंने ऐसे आतंकवादियों

को शरण दी है उन देशों ने गलत किया है वास्तव में तो इनको मरना ही चाहिए था। लेकिन हम भारत में वैसा नहीं कर पाए और विदेशों में अपने आप वैसा हो गया।

यह हत्या ईश्वरीय है स्थानीय है या इसमें भारत सरकार का कोई हाथ है यह बात तो मैं कुछ नहीं कह सकता लेकिन मैं इतना जरूर कह सकता हूं कि **70** वर्षों से जो आतंकवादी तैयार हो रहे थे वह अब पिछले एक-दो वर्षों से नरेंद्र मोदी के कार्यकाल में लगातार किसी न किसी तरीके से मारे जा रहे हैं, तो मैं पनौती नेहरू परिवार को मानूं या नेहरू परिवार को मानूं। यदि नरेंद्र मोदी की बात ईश्वर या खुदा सुन रहा है तो मैं नरेंद्र मोदी को कैसे दोष दे सकता हूं। सच बात तो यह है कि यदि पनौती का कोई प्रभाव होता है जिस पर मुझे कोई विश्वास नहीं है लेकिन यदि होता है तो उसके लिए नेहरू परिवार ही जिम्मेदार है, नरेंद्र मोदी नहीं।

उद्योगपतियों की राजनैतिक भूमिका:

राजनीति में बड़े उद्योगपतियों की महत्वपूर्ण भूमिका हमेशा ही रही है। जब कांग्रेस का शासन था तब भी उद्योगपतियों का प्रभाव था और वर्तमान शासन पर भी है। लेकिन जिस तरह विपक्षी दलों ने अडानी ग्रुप को एक तरफा टारगेट किया उससे यह बात बिल्कुल साफ हो गई थी कि अडानी विरोधी उद्योगपतियों के इशारे पर ही विपक्षी दल यह अभियान चला रहे हैं। जितने लंबे समय तक अडानी के विरोध में लगातार प्रचार किया गया उससे स्पष्ट था कि बहुत बड़े-बड़े उद्योगपतियों ने विपक्षी दलों को आर्थिक मदद दी है। बंगाल की सांसद महुआ मोइत्रा का भेद खुलना तो एक छोटी बात है। अभी तो इस चुनाव के बाद बड़े-बड़े नेता भी बेनकाब हो जाएंगे। बिना उद्योगपतियों की भारी मदद के अडानी के विरोध में विपक्ष का एकजुट हो जाना कई प्रकार के संदेहों को जन्म देता है। विपक्ष के लगातार सिर पटकने के बाद भी जिसमें विदेश के लोग भी शामिल हैं। फिर भी अदानी मैदान में डटकर खड़ा है यह कोई साधारण बात नहीं।

साम्यवादियों का ह्रदय परिवर्तन:

शेहला राशिद और कन्हैया कुमार यह दोनों जेएनयू के बड़े छात्र नेता रहे हैं। दोनों ही साम्यवादी पार्टी के प्रमुख लोगों में शामिल थे। कन्हैया कुमार साम्यवादियों से निराश होकर कांग्रेस पार्टी में शामिल हो गए हैं। शेहला राशिद ने हिंसा से निराश होकर कल यह बयान दिया है कि कश्मीर में नरेंद्र मोदी और अमित शाह की नीतियां बहुत सफल रही हैं शेहला ने सुप्रीम कोर्ट में धारा 370 के पक्ष में जो याचिका दायर की थी उस याचिका को भी वापस ले लिया है। शेहला ने यह भी कहा है कि उसे जिस तरह

की उम्मीद थी कि 370 हटाने का परिणाम बहुत बुरा होगा वैसा नहीं हुआ और वास्तव में कश्मीर पूरी तरह शांत हो गया है। मुझे आश्चर्य है की शेहला राशिद का इतना हृदय परिवर्तन हो गया और कन्हैया कुमार ने भी साम्यवाद से अलगाव किया। साम्यवादियों को इस बात पर गंभीरता से सोचना चाहिए।

सरकारीकरण भ्रष्टाचार का माध्यम:

किसी भी प्रकार का सरकारीकरण भ्रष्टाचार के उद्देश्य से किया जाता है। सरकारीकरण में कई लाभ होते हैं उसमें जो सरकारी नौकर नई-नई भर्ती किए जाते हैं, वे सब वफादार हो जाते हैं वे वोट भी देते हैं। सरकारी नौकरों से भ्रष्टाचार में भी मदद मिलती है उनकी नियुक्ति के समय भी कई तरह के भ्रष्टाचार होते हैं। लालू प्रसाद ने रेल मंत्री रहते हुए नियुक्तियों में कितना भ्रष्टाचार किया यह जग जाहिर है। सरकारी करण के माध्यम से हमेशा भ्रष्टाचार के रास्ते खुलते चले जाते हैं इसलिए सभी सरकारी कर्मचारी और नेता सरकारी करण का समर्थन करते हैं वे यह मानते हैं कि लोकतंत्र एक भैंस है और उस भैंस का मुंह आम जनता की तरफ है और थन तंत्र की तरफ है, तंत्र जितना चाहे दूध निकाल सकता है, लोक उस भैंस को खाना खिलाने के लिए बाध्य है। जो भी लोग निजीकरण का विरोध करते हैं उन सब का मुख्य उद्देश्य है कि वह हमेशा इसी तरह लूटपाट करते रहे। भ्रष्टाचार के अवसर खुले रखें। मेरा आपसे निवेदन है कि इस प्रकार जो लोग निजीकरण का विरोध करते हैं। उन्हें प्रत्यक्ष समझाइए कि उन्हें इस तरह अप्रत्यक्ष रूप से भ्रष्टाचार का पोषण नहीं करना चाहिए। सरकारीकरण और भ्रष्टाचार एक ही सिक्के के दो पहलू हैं।

आदिवासी कानून विकास में बाधक:

भारत में आदिवासी-गैर आदिवासी की धारणा अंग्रेजी शासन काल में शुरू हुई। अंग्रेज चाहते थे कि भारत में वर्ग निर्माण हो और वह वर्ग संघर्ष में बदल जाए । अंग्रेजों के जाने के बाद भारत सरकार को अंग्रेजों की यह नीति बहुत पसंद आई और उन्होंने अंग्रेजों के जाने के बाद भी आदिवासी गैर आदिवासी की विभाजनकारी नीति को लगातार प्रसारित किया, बल्कि बहुत कुछ मजबूत भी किया लेकिन उसके बहुत दुष्परिणाम हुए हैं। समाज उसके कारण विभाजित हो रहा है धूर्त आदिवासी लगातार शरीफ गैर आदिवासियों का शोषण कर रहे हैं। उड़ीसा सरकार ने वर्तमान समय में यह महसूस किया कि आदिवासियों की जमीन के संबंध में जो कानून बने हुए हैं वह आदिवासियों को संतोष तो देते हैं लेकिन विकास में बाधक हैं उस पर फिर से विचार करना चाहिए। स्वाभाविक है कि धूर्त आदिवासियों ने इसका विरोध किया और उड़ीसा सरकार ने अभी इस पर अपना विचार स्थगित कर दिया है लेकिन मेरे विचार से कभी ना कभी हम

लोगों को इस नीति से पिंड तो छुड़ाना ही पड़ेगा। देश भर के आदिवासियों को यह बात बताई जानी चाहिए कि इस प्रकार के कानून आपके हित में नहीं है। यह कानून आपको संतुष्ट कर सकते हैं लेकिन लाभ नहीं दे सकते। मैं उड़ीसा सरकार को इस कार्य के लिए बधाई देता हूं कि उसने इस विषय पर विचार करने की शुरुआत की।

नक्सलवादी अत्याचार के कारण हुई भाजपा की वापसी:

छत्तीसगढ़ में नए मुख्यमंत्री के रूप में विष्णु देव साय चुन लिए गए हैं। यह बहुत सरल स्वभाव के हैं और आदिवासी हैं, इनके बहुत अच्छे संबंध संघ से भी हैं और रमन सिंह जी से भी हैं। अब इन पर अनेक जिम्मेदारियां आ गई हैं। सबसे बड़ी बात तो यह है कि पिछले 5 वर्षों में कांग्रेस पार्टी ने नक्सलवाद को बहुत प्रोत्साहन दिया। वोटो की लालच में नक्सलवादियों की कई बातें मान ली गई। नक्सलवादियों ने भी चुनाव में कांग्रेस पार्टी का पूरा-पूरा साथ दिया। नक्सलवादी क्षेत्र में कांग्रेस पार्टी अधिक सीटे जीत भी गई, लेकिन इसका दुष्प्रभाव पूरे छत्तीसगढ़ पर पड़ा जितना ही नक्सलवादियों ने भारतीय जनता पार्टी वालों के साथ अत्याचार किया उतना ही अधिक शेष छत्तीसगढ़ में भारतीय जनता पार्टी का समर्थन बढ़ता चला गया। मेरे विचार से आतंकवाद को पूरी तरह समाप्त कर देना चाहिए और अब छत्तीसगढ़ में आतंकवाद विरोधी सरकार आ गई है। नक्सलवाद मुक्त छत्तीसगढ़ बनाना अमित शाह जी ने जिम्मेवारी ली है। मैं चाहता हूं कि छत्तीसगढ़ को नक्सलवाद मुक्त कर दिया जाए।

'लोकस्वराज-आन्दोलन' गाँधी विचार की आवश्यकता:

गांधी को मानने वाले भारत मे दो ग्रुप है एक ग्रुप यह मानता है कि गांधी के विचारों को लेकर दुनिया में आगे बढ़ने की जरूरत है। गांधी विचार हैं लोकस्वराज सर्वधर्म समभाव वैचारिक हिंदुत्व सत्ता का और अर्थ का अकेंद्रीयकरण वर्ग समन्वय विश्व बंधुत्व तो दूसरे ग्रुप का मानना है गांधी की जीवन पद्धति गांधी की खादी स्वदेशी। पहले ग्रुप यह मानता है कि गांधी हत्या की घटना को नए परिप्रेक्ष्य में अब भूल जाइए। अब नए आधार पर समाज में गांधी विचारों को स्थापित कर दीजिए दूसरा ग्रुप गांधी हत्या को लंबे समय तक भुनाना चाहता है। दिन-रात संघ का विरोध करता रहता है उसके पास संघ विरोध के अतिरिक्त कोई और कार्य नहीं है। पहले ग्रुप राजनीति से दूर रहकर वर्तमान सत्ता के साथ तालमेल करना चाहता है तो दूसरा ग्रुप कम्युनिस्ट मुसलमान और नेहरू परिवार के साथ मिलकर इस राजनीतिक सत्ता को उखाड़ फेंकना चाहता है। इन दोनों के बीच में वास्तविक गांधी फंसे हुए हैं मैंने चार-पांच दिन पहले गांधीवादियों को सलाह दी थी कि वह सत्ता संपत्ति के झगड़े से किनारे होकर लोक स्वराज पर सोचना शुरू करें। यह सत्ता और संपत्ति के झगड़ा गांधीवादियों के लिए

शोभा नहीं देते तो मेरे मित्र राजपाल जी जो प्रसिद्ध गांधीवादी हैं उन्होंने मुझे लिखा कुछ मित्रों ने नाराजगी व्यक्त की और लिखा कि यदि अपनी संपत्ति की सुरक्षा करना मूर्खता है तो हम बार-बार ऐसी मूर्खता करने के लिए तैयार हैं। मेरे विचार से मैं अपनी बात पर कायम हूं कि ऐसी मूर्खता बहुत हो चुकी सर्वोदय को बहुत नुकसान हो चुका है और अब ऐसी मूर्खता पर फिर से विचार करिए। मेरी अपने मित्रों को यह सलाह है की वाराणसी में हमारे गांधीवादी सभी मित्र बैठकर इस बात पर विचार करें कि सर्वोदय वर्तमान स्थिति में किधर जा रहा है और वर्तमान स्थिति में गांधी विचारों को मजबूत करने के लिए लोक स्वराज आंदोलन को एकमात्र आधार बनाया जा सकता है। यदि इस आधार पर हम गांधीवादी मिलकर वाराणसी में कोई बैठक रख सकते हैं मैं भी अपने साथियों के साथ उस बैठक में शामिल होने के लिए तैयार हूं।

जाति जनगणना से बढ़ेगा जाति संघर्ष:

नीतीश कुमार ने बिहार में जाती जनगणना कराई, इसका साफ-साफ उद्देश्य राजनैतिक था सामाजिक नहीं। पहली बात तो यह है कि सता के लिये कभी जातिवाद का सहारा लेना बहुत घातक है। गांधी और अंबेडकर इस प्रकार के जातिवाद के विरुद्ध थे। लेकिन इन दोनों के जाने के बाद तो जातिवाद को ही सत्ता का एक अच्छा माध्यम मान लिया गया वरना जातीय जनगणना के जो आंकड़े आए हैं यह सब फर्जी आंकड़े हैं। इसमें गरीबी रेखा के नीचे की जो संख्या बताई गई है वह पूरी की पूरी फर्जी है । एक व्यक्ति को एक दिन के काम के लिए जब 10 किलो अनाज आसानी से मिल जाता है तो फिर कोई व्यक्ति गरीबी रेखा के नीचे कैसे हो सकता है। आज तक समझ में नहीं आया कि इस प्रकार के फर्जी आंकड़े बनाने का उद्देश्य क्या है। गरीबी रेखा की अभी तक कोई परिभाषा भी समझ में नहीं आई। कोई कहता है ₹30 प्रति व्यक्ति के नीचे वाला गरीब है तो कोई व्यक्ति इस को ₹200 बता देता है। कोई कुछ अन्य बता देता है। मैं समझता हूं कि नरेंद्र मोदी और मोहन भागवत की जोड़ी इस प्रकार के किसी भी आरक्षण अथवा वर्ग संघर्ष के विरुद्ध हैं लेकिन विपक्ष की मदद ना मिलने के कारण यह दोनों भी मजबूर हो गए हैं कि इस जातिवाद के नासूर को किस प्रकार से खत्म किया जाए। मैं फिर से नीतीश कुमार कांग्रेस पार्टी से निवेदन करता हूं कि वह सत्ता की राजनीति के लिए इस प्रकार जाती संघर्ष का सहारा ना ले।

अपने जीवन के बचपन काल से ही मै जन्मना जाति और जन्मना वर्ण व्यवस्था के खिलाफ रहा। मैं जन्म से तो अग्रवाल माना जाता हूं लेकिन मैं बचपन में ही ब्राह्मण बन गया था और आज तक मैं जन्मना जाति और जन्म से वर्ण व्यवस्था का विरोध ही करता हूं। मैं यह मानता हूं कि कर्म के अनुसार जाति और योग्यता के आधार पर वर्ण बनना चाहिए जन्म के आधार पर नहीं। जन्मना जाति और वर्ण का हमेशा विरोध

किया जाना चाहिए लेकिन राजनीतिक स्वार्थ के लिए कांग्रेस पार्टी नीतीश कुमार तथा कुछ अन्य राजनीतिक दल जातिवाद और वर्ण व्यवस्था के जन्मना मानने का गलत तरीका अख्तियार कर रहे हैं। आम जनता को इस प्रकार के राजनीतिक स्वार्थ का विरोध करना चाहिए।

छुआछूत अपराध नहीं:

स्वतंत्रता हमारा मौलिक अधिकार है जबकि समानता हमारा संवैधानिक अधिकार है मौलिक अधिकार नहीं। इसका अर्थ हुआ कि छुआछूत को कानून के द्वारा प्रतिबंधित नहीं किया जा सकता। कल सुप्रीम कोर्ट के चीफ जस्टिस ने यह बात बताई कि हम अपना डंडा वहां तक घूमा सकते हैं जहां से आपकी नाक शुरू न हो। यह बात तो बिल्कुल सच है लेकिन व्यावहारिक धरातल पर सुप्रीम कोर्ट भी स्वतंत्रता को असीमित नहीं कहता जबकि स्वतंत्रता की कोई सीमा नहीं बनाई जा सकती उसकी सीमा तो प्राकृतिक रूप से बनी हुई है। इसका अर्थ हुआ कि जब दो लोगों की स्वतंत्रता आपस में टकराती है तब संविधान कानून तंत्र या न्यायालय की भूमिका शुरू होती है अन्यथा किसी को दखल नहीं देना चाहिए। मैं आज तक नहीं समझा कि छुआछूत अपराध कैसे हो गया। मैं छुआछूत मांन सकता हूं यह मेरी स्वतंत्रता है इसे अपराध घोषित नहीं किया जा सकता। हमारे संविधान निर्माता ने नासमझी में छुआछूत को अपराध बना दिया और आज तक हम उसे अपराध मानते चले आ रहे हैं। सामाजिक बहिष्कार करना हमारी स्वतंत्रता है। उस पर किसी प्रकार का कोई बंधन नहीं लगाया जा सकता लेकिन वर्तमान समय में नासमझ तंत्र हमारी सामाजिक बहिष्कार की स्वतंत्रता पर भी प्रतिबंध लगाता है। इस विषय पर खुलकर चर्चा होनी चाहिए।

कृण्वंतो विश्वं आर्यम्:

संघ प्रमुख मोहन भागवत जी ने बैंकॉक में एक नारा दिया है-कृण्वंतो विश्वं आर्यम् सारे संसार को आर्य बनाओ। भागवत जी ने बहुत ही सोच समझकर के यह गंभीर वाक्य दिया है वर्तमान परिस्थितियों में भागवत जी के इस कथन का समर्थन किया जाना चाहिए। लेकिन मेरा यह मानना है कि इस वाक्य में सुधार होना चाहिए। हमें दुनिया को आर्य बनाना है यह उचित नहीं है बल्कि दुनिया आर्य बने यह ज्यादा उचित है क्योंकि हम इस प्रकार की नीतियां बना सकते हैं जिन नीतियों के आधार पर दुनिया आर्य बन जावे लेकिन दुनिया को आर्य बनाना यह अच्छी बात नहीं है। यह तो एक प्रकार से मुसलमान या ईसाइयों की नकल है जो सारी दुनिया को मुसलमान या इसाई बना रहे हैं। मेरे विचार से सारी दुनिया आर्य बने, इस प्रकार का प्रयत्न करना चाहिए। मैं चाहता हूं कि हम लोग इस मुद्दे पर गंभीर चिंतन करें।

इस पर कुछ मित्रों ने यह प्रश्न किया है कि दुनिया आर्य कैसे बने इसके लिए हम क्या प्रयत्न कर सकते हैं। मैंने इस संबंध में बहुत विचार और प्रयत्न किया है। दुनिया के आर्य बनने का मतलब है कि दुनिया का प्रत्येक व्यक्ति आर्य बन जाए। दो दिशाओं से प्रयत्न करने होंगे पहला प्रयत्न होगा राज्य की ओर से। राज्य को यह गारंटी देनी होगी कि प्रत्येक व्यक्ति की सुरक्षा और न्याय अवश्य प्राप्त होगी। जो अपराधी हैं उन्हें दंडित अवश्य किया जाएगा। दूसरा कार्य हम लोगों का है जो समाज के लोग हैं वह इस प्रकार के अनारयों का लगातार हृदय परिवर्तन करते रहे विचारों में बदलाव लावे। यह विचार परिवर्तन और हृदय परिवर्तन भी साथ-साथ चलना चाहिए इसका अर्थ यह हुआ कि एक तरफ से हमारी राजनीतिक व्यवस्था अनार्यों को आर्य बनने के लिए मजबूर कर दे दूसरी ओर हमारी सामाजिक व्यवस्था अनार्यों को आर्य बनने के लिए प्रेरित करें। जब हम दो दिशाओं से मिलकर एक साथ काम करेंगे तभी दुनिया आर्य बन सकेगी।

राहुल गाँधी गम्भीर नहीं:

समाचार मिला है कि अदानी के शेयर बहुत तेजी से बढ़ गए हैं। हिडन वर्ग की रिपोर्ट आने के बाद जो एकाएक मंदी आई थी वह खत्म हो गई। उधर जांच कमेटी ने भी ऐसी संभावना है कि हिडन वर्ग की रिपोर्ट को असत्य माना है। इन सब को देखते हुए ऐसा लगता है कि राहुल गांधी बहुत कष्ट अनुभव कर रहे हैं और वह अभी विदेश जाने की सोच रहे हैं क्योंकि भारत की जनता उन पर विश्वास नहीं कर रही है। इसी तरह इन्होंने राफेल के नाम पर भी वरगलाया था। इसी तरह इन्होंने अदानी के नाम पर वर्गलाया है कुछ भी झूठ को उठाकर लगातार उसे रिपीट करके सत्य सिद्ध करने का प्रयास घातक होता है और वह विदेश जाने के लिए मजबूर कर देता है। इसलिए मेरा यह सुझाव है कि उद्योगपतियों से धन के लिए उन्हें लगातार गाली देना अच्छी आदत नहीं है।

मेरे कुछ मित्रों ने मुझे कहा कि यह पोस्ट हल्की है इसमें गंभीरता नहीं है और मैं एक गंभीर विचारक हूं मुझे इस प्रकार के मामलों से दूर रहना चाहिए। मैं अपने मित्रों के कथन से सहमत हूं। मैं भी महसूस करता हूं कि यह पोस्ट गंभीर नहीं है लेकिन मैं यह भी महसूस करता हूं कि भारत में जिस प्रकार उद्योगों के खिलाफ वातावरण बनाया जा रहा है। अडानी अंबानी कहते-कहते गुजराती शब्द का भी प्रयोग करने लगे हैं वह देश के लिए उचित नहीं है। उद्योगपतियों को गाली देने से गरीबों को खुश तो किया जा सकता है लेकिन देश का बहुत बड़ा नुकसान होगा क्योंकि हम दुनिया से कंपटीशन कर रहे हैं और उद्योग हमारे देश में ऐसे कंपटीशन में सहायक है। इसलिए किसी भी प्रकार से उद्योगपतियों को झूठी गालियां देकर उन्हें निरूत्साहित करना देश

हित के विरुद्ध है। मैं अनुभव करता हूं कि राहुल गांधी इतने गंभीर नहीं है कि वह इतनी गहराई से सोच सके। इसलिए मैंने इस गंभीर बात को इतने हल्के में लिखने का प्रयास किया है। सच बात यह है कि मैं हमेशा से वर्ग संघर्ष का विरोधी हूं पहले भी था आज भी हूं। मेरे एक मित्र जीवन भर अमीरी रेखा के पक्ष में आंदोलन चलाते रहे और मैं जीवन भर उनका विरोध करता रहा क्योंकि मैं इस प्रकार के वर्ग संघर्ष पर विश्वास नहीं करता। इसलिए मेरा आपसे निवेदन है कि आप मेरी पोस्ट को नए परिप्रेक्ष्य में पढ़ने की कृपा करें।

पर्यावरणवादी एवं मानवाधिकारवादी विदेशी जीव:

हमारे देश में जंगलों की सुरक्षा के लिए भिन्न-भिन्न प्रकार के खतरनाक पशु छुट्टा छोड़ दिए जाते हैं। यह पशु इतने शक्तिशाली होते हैं कि यह अगर मनुष्य को खो जाए तो कोई बात नहीं है लेकिन मनुष्य अपनी सुरक्षा के लिए इनको नहीं मार सकता क्योंकि यह सरकार द्वारा पोषित पशु माने जाते हैं। इस तरह भारत के विकास को अवरुद्ध करने के लिए दुनिया के अनेक देशों ने भारत में अनेक प्रकार के ऐसे जीव छोड़ रखे हैं जिन्हें पर्यावरण वादी भी कहा जाता है, मानवाधिकारवादी भी कहा जाता है। अभी जो उत्तराखंड में एक सुरंग धसने की घटना हुई उस घटना में 41 मजदूरों को सरकार ने सुरक्षित निकाल लिया लेकिन दुनिया द्वारा पालीत पोषित यह पर्यावरण वादी अब नई मांग शुरू करेंगे कि इस प्रकार के रास्ते ना बनाए जाएं किसी तरह इन रास्तों को बनने में अवरोध किया जाए इसके लिए न्यायालय भी जा सकते हैं, आंदोलन भी कर सकते हैं क्योंकि दुनिया के देशों से इन्हें आर्थिक मदद भी मिलती है और इन्हें सम्मानजनक पद भी प्राप्त होता है। इसलिए भारत में विकास तेजी से ना हो यह छुट्टा साड़ दिन-रात पर्यावरण के नाम पर चिल्लाते रहते हैं। दुनिया जानती है की आबादी बढ़ रही है सड़के बनानी पड़ेगी पहाड़ों पर हमें सुरक्षा भी करनी है सड़के बनानी पड़ेगी आवागमन को बढ़ाना पड़ेगा पहाड़ों पर जो लोग रहते हैं उनकी सुविधा भी बढ़ानी पड़ेगी और जंगल नहीं काटना चाहिए सड़क नहीं बढ़नी चाहिए इन आंदोलनकारी को खुश भी रखना पड़ेगा। मैं आज तक नहीं समझा कि यह दोनों बातें एक साथ कैसे संभव है इसलिए मैं चाहता हूं कि अब यह पर्यावरण वादी भारत के विकास का रोड़ा ना बने। सरकार पर विश्वास करें। सरकार पर्यावरण और विकास के बीच एक संतुलन बनाकर चलना चाहती है और यह विदेशी एजेंट उस संतुलन को बिगाड़ना चाहते हैं। इन विदेशी एजेंट से भारत की जनता को सावधान रहना चाहिए।

प्रदूषण का भार सिर्फ ग्रामीण अर्थव्यवस्था को देना उचित नहीं:

पर्यावरण प्रदूषण पर चिंता व्यक्त करते हुए दुनिया भर के प्रमुख लोग अभी दुबई में इकट्ठा हुए थे। नरेंद्र मोदी जी ने अपने भाषण में यह कहा की विकसित देश पर्यावरण प्रदूषण करते हैं और विकासशील देशों को उसका खामियाजा उठाना पड़ता है यह उचित नहीं है। यदि ऐसी कोई मजबूरी है तो विकसित देश विकासशील देशों की आर्थिक मदद करें जिससे वे लोग पर्यावरण को ठीक रख सके। मैं इस सुझाव से तो सहमत हूं किंतु मैं यह बात भी जानना चाहता हूं कि भारत में जो विकसित शहर है वह सारा पर्यावरण प्रदूषण करते हैं और अविकसित क्षेत्रों को उसका खामियाजा उठाना पड़ता है। हम लोगों को अपने क्षेत्र में रिजर्व जंगल बनाने पड़ते हैं जहां पर्यावरण की सुरक्षा के लिए जंगली जानवर रखे जाते हैं किसी शहर में गाय भी नहीं रख सकते क्योंकि गाए भी वहां गंदगी करती है गाय तक गांव में रखना मजबूरी है लेकिन शेर भालू चीते सब गांव में रखे जाते हैं । मेरा यह सुझाव है कि जिस तरह हम विकसित देशों से विकासशील देशों के लिए धन की मांग कर रहे हैं इस तरह हमारी सरकार क्यों नहीं शहरों से धन अधिक लेकर गांव को मदद करें। यह भी तो न्याय संगत ही है। आज मुझे यह देखकर दुख होता है कि गांव का आदमी अगर मर जाता है तो उसे ₹200000 मुआवजा मिलता है और शहर का आदमी अगर मर जाता है तो उसे 10 लाख से 50 लाख तक दिया जाता है। एक भी पर्यावरणवादी या मीडिया कर्मी किसी गांव के व्यक्ति के लिए कभी आंदोलन नहीं करते कि इस गांव के व्यक्ति को हाथी या शेर ने मार दिया है और इसे एक करोड़ या 50 लाख रुपया मुआवजा दिया जाए आज तक मैंने कभी ऐसा आंदोलन नहीं देखा और इसलिए मुझे दुख होता है कि हमारे देश के अंदर भी गांव और शहर का इतना भेदभाव है।

चुनाव परिणाम और भ्रष्टाचार पर कार्यवाही:

चार राज्यों के चुनाव परिणाम आ गए हैं बहुत पहले ही राहुल गांधी ने कहा था यह लड़ाई ईडी और कांग्रेस के बीच है। मैं भी मानता हूं यह लड़ाई सीधे-सीधे नरेंद्र मोदी और राहुल गांधी के बीच थी। नरेंद्र मोदी के पास ईडी का एक ऐसा हथियार था जिसने सभी भ्रष्ट लोगों को नंगा कर दिया। जनता के बीच में एक यह संदेश गया कि नरेंद्र मोदी भ्रष्टाचार को रोकने में सक्षम है और वह किसी के साथ कोई समझौता नहीं करेंगे। अब चुनाव के नतीजे आ गए हैं अब नरेंद्र मोदी को वह करके दिखाना है जो उन्होंने देशभर में घूम-घूम करके कहा था कि हम भ्रष्टाचारियो को उचित दंड दिलाएंगे। मेरे विचार से नरेंद्र मोदी को अब इस दिशा में सक्रिय हो जाना चाहिए। इन चुनावों ने 2024 भी नरेंद्र मोदी के लिए पक्का कर दिया है। यह बात साफ दिख रही है कि नरेंद्र मोदी अगले चुनाव में और भी अधिक बहुमत से आएंगे।

यहाँ आज मैं विपक्ष को भी कुछ सलाह देना चाहता हूं। विपक्ष वर्तमान समय में चुनाव लड़ने के लिए तीन नीतियों पर लगातार सक्रिय है। पहले नंबर पर है सांप्रदायिकता दूसरा पर है जातिवाद और तीसरा है मुफ्त बांटना यह तीनों ही नीतियां देश के लिए घातक हैं। लेकिन विपक्ष सस्ती लोकप्रियता के लिए इन तीनों नीतियों को अपना मुख्य आधार बनाकर चल रहा है। मेरे विचार से सांप्रदायिकता जातिवाद और अर्थनीति तीनों मुद्दों पर विपक्ष को अपनी नीति बदलनी चाहिए। हो सकता है कि इस बदलाव से विपक्ष को प्रदेशों में कुछ नुकसान उठाना पड़े, लेकिन कुल मिलाकर विपक्ष अगर इन तीन मुद्दों पर नीति बदलकर चलेगा तो विपक्ष जीवित रह सकता है अन्यथा सांप्रदायिकता जातिवाद और मुफ्त बांटना यह तीनों नीतियां दूरगामी नुकसान करेंगी। आप इन तीन नीतियों पर चलकर कुछ तात्कालिक लाभ उठा सकते हैं लेकिन इन तीनों नीतियों पर नरेंद्र मोदी ने भी आपको इस तरीके से जवाब देना शुरू कर दिया है जिस तरीके से आप चल रहे हैं। अब तक नरेंद्र मोदी सिद्धांतों पर चल रहे थे अब उन्होंने अपने सिद्धांतों से समझौता करके व्यावहारिक नीति अपना ली है। अब वह भी सांप्रदायिकता जातिवाद और मुक्त बांटने को व्यावहारिकता और मजबूरी समझ कर उसी रास्ते से आपको जवाब देना शुरू कर दिया है जिसका परिणाम होगा आपकी मौत। इसलिए मेरा सुझाव है कि आप अपनी नीतियों पर फिर से विचार करें।

मैं छत्तीसगढ़ के रायपुर में रहता हूं। चुनाव में भूपेश बघेल के कमजोर पड़ने की शुरुआत उसी दिन हो गई थी जब करीब कई 100 करोड़ रूपया ईडी ने जप्त कर लिया था, उसके बाद ही धीरे-धीरे गिरावट शुरू हुई। दूसरा महत्वपूर्ण आधार यह बना कि नरेंद्र मोदी ने अंतिम दिनों में अपनी पूरी नीतियां बदल दी। उन्होंने जीतने लायक उम्मीदवारों को टिकट दिया भले ही उम्र कुछ भी हो परिवार कोई भी हो दूसरी बात कि उन्होंने मुफ्त रेवड़ी के साथ समझौता कर लिया। कांग्रेस पार्टी ने अगर कहा 3000 तो नरेंद्र मोदी ने कहा 3100 और भी कई प्रकार की मुफ्त बांटने की घोषणा की गई 2 साल का बोनस भी तुरंत देने की घोषणा हुई। तीसरा मोदी ने समझौता किया कि उन्होंने जातिवाद के मामले में भी अपना रूप बदला। नरेंद्र मोदी ने कई जगह यह कहा कि मैं तो पिछड़े वर्ग का हूं इस तरह कांग्रेस पार्टी के मुक्त रेवड़ी भ्रष्टाचार और जातिवादी आक्रमण की हवा ईडी और नरेंद्र मोदी ने निकाल दी। परिणाम हुआ वह सबके सामने है। कांग्रेस के एक बहुत बड़े नेता अधीर रंजन चौधरी ने स्पष्ट किया है यह लड़ाई सीधी सीधी नरेंद्र मोदी और मुख्यमंत्री के बीच थी। यह लड़ाई कांग्रेस पार्टी और भाजपा के बीच नहीं रह गई थी। इस लड़ाई में हमारे मुख्यमंत्री हार गए और नरेंद्र मोदी जीत गए। नरेंद्र मोदी ने अपनी स्वीकार्यता तीनों प्रदेशों में सिद्ध कर दी है। मैं अधीर रंजन के बयान से सहमत हूं।

मैं किसी राजनीतिक दल का समर्थक नहीं हूं, मुझे तो किसी चुनाव में वोट दिए भी करीब 40 वर्ष हो गए हैं। मैंने इन 40 वर्षों में कभी किसी राजनीतिक दल के पक्ष में कोई काम नहीं किया। यहां तक कि अपने परिवार के लोगों को भी वोट देने के लिए कभी प्रेरित नहीं किया कि किसे देना है लेकिन मैं ईश्वर से हमेशा प्रार्थना करता रहा कि वह नेहरू परिवार को कभी मजबूत न होने दे, क्योंकि नेहरू परिवार ने मेरे जैसे बेगुनाह को भी 18 महीने आपातकाल में जेल में बंद करके रखा था। राजनीति छोड़ देने के 15 वर्ष बाद भी मुख्यमंत्री ने मेरी हत्या की योजना बनाई थी, उसे मैं कैसे भूल जाऊं। नेहरू परिवार ने हमेशा सांप्रदायिकता का समर्थन किया और हिंदुओं को दूसरे दर्जे का नागरिक बनाकर रखा। मैं छत्तीसगढ़ में रह रहा हूं और छत्तीसगढ़ में मैंने भूपेश बघेल का चुपचाप विरोध किया क्योंकि मुझे भूपेश बघेल की यह नीति ना पसंद थी कि छत्तीसगढ़ को क्षेत्रीयता की दिशा में बढ़ाया जाए, छत्तीसगढ़ी भाषा को बहुत तेजी से आगे बढ़ाया जाए। जो व्यक्ति आराम से हिंदी समझ सकता है उसे हिंदी भाषा में बात करने से क्यों रोका जाए। एक तरफ छत्तीसगढ़ी भाषा को प्रोत्साहन और दूसरी तरफ हिंदी की जगह अंग्रेजी को प्रोत्साहन यह नाटक कैसे पसंद किया जा सकता है। भूपेश बघेल ने चुनाव जीतते ही चार शब्द। नरवा चुरवा जैसे दिए थे वह चारों शब्द 5 वर्ष में भी मुझे याद नहीं रहे और मैं उन चारों का अर्थ नहीं समझ सका। मैं समझता हूं कि क्षेत्रीयता और जातिवाद के माध्यम से राजनीति करना तात्कालिक लाभ तो दे सकता है लेकिन दीर्घकालिक नुकसान करेगा। छत्तीसगढ़ के जो नतीजे आए उन नतीजे को देखकर मुझे भी खुशी हुई।

ईवीएम पर आरोप बूथ कैप्चरिंग की मंशा:

दिग्विजय सिंह, मायावती, संजय राउत तथा कुछ कुछ कमलनाथ ने भी इस तरह का संदेह व्यक्त किया कि ईवीएम मशीन के कारण चुनाव में गड़बड़ी हो सकती है इसलिए चुनाव वैलेट पेपर से होना चाहिए लेकिन अन्य लोगों का इस बात को समर्थन नहीं मिला क्योंकि यह बात ज्यादा छत्तीसगढ़ से उठ रही है और छत्तीसगढ़ में सरकारी कर्मचारी का जो वोट बैलेंट पेपर से हुआ और उस वोट में भी कांग्रेस पार्टी बीजेपी से पीछे रही, यह बात जब से सामने आई है तब से आरोप लगाने वाले चुप हो गए हैं। दिग्विजय सिंह सरीखे लोगों को यह विश्वास रहा है कि हम लोग वैलेट पेपर से पहले चुनाव जीत जाते थे क्योंकि बूथ कब्जा कर लेते थे और बूत कब्जा करके चुनाव जीतने में सुविधा होती थी। अब चुनाव मशीन से हो रहे हैं और गड़बड़ी करने की गुंजाइश कम है इसलिए इस प्रकार के लोग छटपटा रहे हैं कि किसी तरह से चुनाव फिर उसी पुराने तरीके से हो जिसमें बूथ कब्जा करके बड़ी मात्रा में ठप्पा मार दिया जाए।

भ्रष्टाचार पावर में है व्यक्ति में नहीं:

मैं लंबे समय से यह बात लिखता रहा हूं कि व्यक्ति भ्रष्ट नहीं है बल्कि व्यक्ति के पास जो पावर इकट्ठा हो जा रहा है वह भ्रष्ट है। व्यक्ति जिस व्यवस्था में जी रहा है वह व्यवस्था भ्रष्ट है। अभी-अभी हम लोगों ने देखा कि ईडी भ्रष्टाचार रोकने का काम करती है लेकिन ईडी में ही कई लोग भ्रष्टाचार में पकड़े गए। अभी राजस्थान में भी भ्रष्टाचार में पकड़े गए थे अभी आंध्र में भी ऐसी घटना हुई है और भी कई जगह सुनने में आता है कि ईडी के लोग भी भ्रष्टाचार करते हैं। हम सब अच्छी तरह जानते हैं कि अंबानी को धमकी देने वाला भी कोई उच्च शक्ति प्राप्त पुलिस अधिकारी ही था। ड्रग्स रखकर एक कलाकार को फसाने का काम भी करने वाला कोई सीबीआई जांच अधिकारी ही था। इसलिए मैं इस बात का पक्षधर हूं कि सब प्रकार के पावर नीचे दे दिए जाएं बहुत ही मजबूरी में यदि कहीं पावर रखना हो तो उसे बहुत अच्छी निगरानी में रखा जाए स्वतंत्र ना छोड़ा जाए क्योंकि भ्रष्टाचार पावर में है, व्यक्ति में नहीं।

ब्लैक मेलर महिलाएं से सचेत रहने की आवश्यकता:

मैं तो बहुत लंबे समय से लिखता रहा हूं कि महिलाओं को समान अधिकार दे दिया जाए, विशेष अधिकार देना बहुत घातक होगा लेकिन हमारी सरकारी पश्चिम की आंख बंद करके नकल कर रही हैं और महिलाओं को समान अधिकार न देकर विशेष अधिकार दे रहे हैं। उसी का आज परिणाम दिख रहा है कि अनेक धूर्त महिलाएं इन विशेष अधिकारों का दुरुपयोग कर रही हैं। आज सज्जन जिंदल को भी पता चल गया होगा कि विशेष अधिकार दिए जाने के क्या परिणाम होते हैं। एक महिला जज ने अपने सीनियर अफसर पर भी आरोप लगा दिया। एक आईएएस अफसर के लड़के पर भी एक महिला ने अनर्गल आरोप लगा दिए। आज तो बाढ़ आई हुई है इस प्रकार की महिलाओं की जो पुरुषों को ब्लैकमेल कर रहे हैं, बहुत से बेचारे पुरुष ब्लैकमेल भी हो रहे हैं। अब सजल जिंदल न्यायाधीश महोदय और आईएएस अफसर को यह आभास हो रहा है कि जिस समय मुनि जी कह रहे थे उसे समय इन्हें सावधान हो जाना चाहिए था। मैं फिर कहता हूं कि महिलाओं को विशेष अधिकार देने के बहुत अधिक दुष्परिणाम भोगने पड़ेंगे। कोई भी धूर्त महिला किसी पर भी कभी भी आरोप लगा देगी। मैं सज्जन जिंदल आईएएस अफसर या सीनियर जज को निर्दोष नहीं कह रहा, लेकिन मेरा यह अनुभव बताता है कि अनेक महिलाएं पुरुषों के साथ सहमति से संबंध बनाती हैं और बाद में जब आपस में खटपट होती है तब वह कानून का दुरुपयोग करती है यह लटकती हुई तलवार बहुत घातक है। फिर से मेरा निवेदन है की महिलाओं को समान अधिकार दे दीजिए विशेष अधिकार समाप्त कर दीजिए। दूसरी बात यह है कि महिलाएं यदि कोई आरोप लगाती हैं तो प्रथम दृश्ट्या उसे सच मानने की गलती मत कीजिए।

विचार मंथन

यह विचार मंथन क्या है और उसका लाभ क्या है, इस पर भी चर्चा करनी चाहिए। हम प्रतिदिन किसी एक निश्चित विषय पर विपरीत विचार के लोग एक साथ बैठकर तर्क वितर्क करते हैं, कोई प्रस्ताव पारित नहीं होता कोई निष्कर्ष निकाला नहीं जाता है। सब लोग एक घंटे बाद अपने-अपने घर चले जाते हैं । यह एक प्रकार का मानसिक व्यायाम है, जिस तरह बाबा रामदेव शारीरिक व्यायाम कराते हैं इस तरह ज्ञान यज्ञ परिवार मानसिक व्यायाम कराता है। यह विधि 70 वर्ष पहले मैंने आर्य समाज से सीखी थी और हम लोगों ने रामानुजगंज शहर में बैठकर इसका लगातार प्रयोग किया। परिणाम बहुत अच्छे आए। रामानुजगंज शहर के आम लोगों में समझदारी बढी। रामानुजगंज का इतिहास देशभर में अच्छा माना जाता है। यहां के लोग आसानी से ठगे नहीं जाते, समझदारी का प्रतिशत निरंतर बढ़ता जाता है इन सब का श्रेय इसी मानसिक व्यायाम प्रणाली को जाता है, जो हम लोगों ने शुरू की है। आज आप मेरी योग्यता भी देख सकते हैं, लेकिन यह योग्यता इसी मानसिक व्यायाम का परिणाम है। आज दुनिया के हजारों लोग इस मानसिक व्यायाम प्रणाली से जुड़े हुए हैं इस प्रणाली का एक लाभ बिल्कुल निश्चित है कि आप की समझदारी बहुत बढ़ जाएगी और आप ठीक समय पर उचित निर्णय लेने की शक्ति प्राप्त कर लेंगे । मेरा आपसे निवेदन है कि आप इस प्रणाली से जुड़े। आप अपने घर में भी विपरीत विचारों के लोगों के साथ बैठकर तर्क वितर्क कर सकते हैं, आपको अवश्य लाभ होगा इतनी गारंटी है।

हमारी संस्था दुनिया भर में यह संदेश दे रही है कि वर्तमान परिस्थितियों में हमें शराफत छोड़कर समझदारी से काम लेना चाहिए। हम यह महसूस करते हैं कि आम लोगों में शराफत और धुर्तता तो बढ़ती जा रही है लेकिन समझदारी कम होती जा रही है। महत्वपूर्ण प्रश्न यह होता है कि समझदारी इतनी महत्वपूर्ण क्यों है? आप विचार करिए कि अगर आपके घर के आसपास कहीं आग लग जाए तो आपको क्या करना चाहिए। आग बुझाना चाहिए या अपना घर बचाना चाहिए। मेरे विचार से हमें क्या करना चाहिए यह किसी भी सिद्धांत से नहीं सीखा जा सकता है। किसी पुस्तक में यह लिखा नहीं मिलेगा क्योंकि यदि आग थोड़ी लगी है तो आप अपना घर बचा सकते है और यदि आग भयानक लगी है और आपने खुद को बचाने के बजाय घर बचाने की कोशिश की तो आग फैल सकती है। यदि आग बहुत अधिक लगी हुई है और आपने आग बुझाने की कोशिश की तो आग तो नहीं बुझेगी आपका घर भी जल सकता है इसलिए परिस्थिति अनुसार आपको यह अनुमान लगाना पड़ेगा कि हमें तत्काल आग बुझाना उचित है या घर बचाना उचित है। यह परिस्थिति अनुसार निर्णय करने की क्षमता विकसित हो इसी

को हम समझदारी कहते हैं। मैं समझता हूं कि हमारे अंदर समझदारी घटती जा रही है और शराफत या चालाकी का एक पक्षीय बढ़ना हमेशा घातक है जैसा कि वर्तमान में दिख रहा है। इसलिए मैं आपसे निवेदन करता हूं कि आप प्रतिदिन 8:00 बजे रात को होने वाले विचार मंथन कार्यक्रम से जब भी समय मिले आप कभी जुड़ते रहिए जिससे आपका मानसिक व्यायाम भी होता रहे और आपके अंदर समझदारी भी बढ़ती रहे।

ZOOM चर्चा कार्यक्रम:

1: 7 दिसम्बर 2023 रात 8:00 बजे रामानुजगंज में देश के कुछ विद्वानों ने ज़ूम पर बैठकर इस विषय पर गंभीर चर्चा की कि दुनिया में वर्तमान समय में चार संस्कृतियों के बीच प्रतिस्पर्धा चल रही है। वे चार है भारतीय अर्थात हिंदू संस्कृति पाश्चात्य अर्थात इसाई संस्कृति इस्लामी संस्कृति और साम्यवादी संस्कृति। यह चारों संस्कृतियां आपस में प्रतिस्पर्धा कर रही हैं लेकिन इन चारों में से भी भारतीय संस्कृति और इसाई संस्कृति लोकतांत्रिक तरीके से काम करते हैं जबकि मुस्लिम संस्कृति और साम्यवादी संस्कृति बल प्रयोग पर विश्वास करते हैं, तानाशाही में विश्वास करते हैं। इन परिस्थितियों में हमें कुछ भिन्न प्रकार से सोचना पड़ेगा हम किसे शत्रु माने किसे प्रतिस्पर्धी माने यह गंभीर विषय है। यह सोचा गया कि जो संस्कृतियों व्यक्ति को मौलिक अधिकार नहीं देती जो संस्कृतियां लोकतांत्रिक नहीं है उन्हें तो शत्रु मानना चाहिए और जो संस्कृतियां लोकतांत्रिक हैं, उन्हें हम प्रतिस्पर्धी मान सकते हैं। जो प्रतिस्पर्धी हैं उनके साथ हम वैचारिक धरातल पर कंपटीशन करेंगे और जो शत्रु हैं उनके साथ हम संगठनात्मक तरीके से निपटेंगे। यह दोनों तरीके भिन्न-भिन्न है लेकिन इनमें भी यदि हम इस्लाम और साम्यवाद को एक साथ जोड़ देंगे तो हमारी शक्ति कमजोर हो जाएगी इसलिए यह गंभीर विचार मंथन हुआ कि इस्लाम या साम्यवाद में से किसी एक को शत्रु माना जाए और दूसरे के साथ ढुलमुल नीति अपनाई जाए। पाश्चात्य संस्कृति को हम मित्र मान सकते हैं उसके साथ प्रतिस्पर्धा कर सकते हैं। इस तरह की नीति यदि बनाई जाएगी इसका अर्थ यह हुआ कि साम दाम दंड भेद में से हमें पश्चिम के साथ शाम या दाम का व्यवहार करना चाहिए और इस्लामी या साम्यवादी संस्कृति के साथ दंड और भेद का उपयोग करना चाहिए।

2: हमारे रामानुजगंज कार्यालय से रविवार को छोड़कर प्रतिदिन रात 8:00 बजे किसी एक गंभीर विषय पर ज़ूम पर चर्चा होती है। 8 दिसम्बर 2023 का विषय था दुनिया की प्रमुख समस्याएं और समाधान। चर्चा में यह बात सामने आई कि भले ही दुनिया में सैकड़ो अलग-अलग समस्याएं दिखती हैं लेकिन वह सभी समस्याएं दो प्रमुख समस्याओं का बाय प्रोडक्ट है। यह दो प्रमुख समस्याएं हैं-दुनिया के प्रत्येक व्यक्ति में लगातार बढ़ता स्वार्थ और उद्दंडता तथा दूसरी समस्या है लगातार बढ़ता सत्ता का

केंद्रीयकरण। इन समस्याओं के समाधान पर भी चर्चा हुई। व्यक्ति के स्वभाव में आए बदलाव को ठीक करने का एक समाधान है कि व्यक्तिगत संपत्ति और व्यक्तिगत स्वतंत्रता को किसी न किसी रूप में परिवार के साथ जोड़ दिया जाए। प्रत्येक व्यक्ति को सहजीवन अपनाने के लिए बाध्य कर दिया जाए। दूसरी समस्या है इसके समाधान के रूप में लोकतंत्र की जगह लोक स्वराज प्रणाली को आगे बढ़ाने का सुझाव आया है। चर्चा में इस विषय पर सर्वसम्मति थी कि परिवार व्यवस्था को संवैधानिक आधार देकर तथा वर्तमान लोकतांत्रिक प्रणाली को सहभागी लोकतंत्र का रूप देकर हम इन समस्याओं के समाधान की शुरुआत करके दुनिया के सामने उदाहरण प्रस्तुत करें।

3: 9 दिसम्बर दिन शनिवार शाम 7:00 बजे से 9:00 बजे तक हमारे **दिल्ली कार्यालय** ने एक परिचर्चा आयोजित की। इस चर्चा में दुनिया भर के 25-30 विद्वानों ने भाग लिया। परिचर्चा पहले तो शुरू हुई वर्तमान चुनाव के विषय पर और उसके बाद खालिस्तान समस्या से होते हुए यह चर्चा मुड़ गई इस विषय पर कि वर्तमान भारत में सरकारीकरण को बढ़ावा दिया जाए या निजीकरण को। इस विषय पर एक पक्ष इस बात पर अड़ा हुआ था कि राज्य का काम सुरक्षा और न्याय है जन कल्याण उसका स्वैक्षिक कार्य है प्राथमिक कार्य नहीं जबकि एक दूसरा पक्ष इस बात पर जोर दे रहा था कि राज्य का पहला काम जनकल्याण है राज्य को शिक्षा और स्वास्थ्य पर अधिक ध्यान देना चाहिए। दोनों पक्षों की ओर से अपने-अपने तर्क प्रस्तुत किए गए और 9:00 बजे रात को चर्चा अधूरी ही समाप्त हो गई लेकिन इस प्रश्न का उत्तर किसी के पास नहीं था कि गरीब ग्रामीण श्रमजीवी कृषि उत्पादन पर भारी टैक्स लगाकर शिक्षा और स्वास्थ्य पर खर्च करना किस प्रकार न्याय संगत है। अधिकांश लोग तो यह जानते ही नहीं थे कि कृषि उत्पादन पर भी किसी प्रकार का कर लगता है । रात 9:00 बजे चर्चा स्थगित कर दी गई। अगली तारीख दिल्ली कार्यालय फिर निश्चित करेगा।

4: हम लोगों ने 11 दिसम्बर 2023 रात 8:00 बजे जूम पर इस विषय पर चर्चा की कि श्रम और बुद्धि के बीच वर्तमान समय में दुनिया में कैसा संतुलन बना हुआ है। चर्चा में यह बात साफ तौर पर सामने आई कि पिछले कुछ हजार वर्षों से श्रम शोषण के नए-नए तरीके बुद्धिजीवी दुनिया भर में खोजते रहे हैं। इन्हीं तरीकों के अंतर्गत भारतीय समाज व्यवस्था में जन्म के आधार पर वर्ण और जातियां बनाई गई। यह एक प्रकार का जातीय आरक्षण था जिसके बहुत दुष्परिणाम हुए और श्रम लगातार कमजोर होता चला गया। दूसरी ओर पश्चिम ने श्रम शोषण के लिए कृत्रिम उर्जा का आविष्कार किया। वर्तमान समय में भारत में दोनों प्रकार के आरक्षण मौजूद हैं अर्थात वह आरक्षण भी है जो पीछे चल रहा था और वह आरक्षण भी है जो श्रम शोषण के लिए भीमराव अंबेडकर आदि ने लागू कर दिया। अंबेडकर द्वारा शुरू किया गया आरक्षण भी श्रम शोषण का सिद्धांत है। इस आरक्षण के पहले भारत के सवर्ण लोग ही श्रम शोषण का

सारा लाभ प्राप्त करते थे। इस आरक्षण के बाद अवर्ण भी उस श्रम शोषण में हिस्सा लेने लगे। इस तरह श्रम आज भी उसी तरह उपेक्षित और शोषित है जैसा स्वतंत्रता के पहले था। गरीब ग्रामीण श्रमजीवी कृषि उत्पादन पर भारी कर लगाकर शिक्षा पर और कृत्रिम उर्जा को सस्ता करने पर खर्च किया जाए। यह सीधा-सीधा श्रम शोषण का सिद्धांत है। इस विषय पर बहुत खुलकर चर्चा हुई और लगभग सर्व सम्मति थी कि बुद्धिजीवियों ने श्रम शोषण के सिद्धांत लागू कर रखे हैं। रात 9:00 बजे हमारी यह चर्चा समाप्त हुई।

5: 13 दिसम्बर 2023 रात 8:00 बजे जूम पर बैठकर विस्तारपूर्वक चर्चा हुई। चर्चा का विषय यह था कि हमें 'मुस्लिम कट्टरवाद' का विरोध ना करके 'कट्टरवाद' का विरोध करना चाहिए चाहे कट्टरवादी कोई भी क्यों ना हो। चर्चा में यह बात साफ हुई कि मुसलमान में कट्टरवादी 90% मिलते हैं, सिखों में भी 60-70% कट्टरवादी है| हिंदुओं में कट्टरवादियों की संख्या कम है, लेकिन हमें यह बात ध्यान रखनी चाहिए कि कट्टरवाद का समर्थन हिंदुत्व के विरुद्ध है। हिंदू कट्टर हो ही नहीं सकता इस पहचान को समाप्त करने की कोई जरूरत नहीं है। हिंदुओं को अपनी पहचान बनाए रखनी चाहिए खासकर वर्तमान समय में जब नरेंद्र मोदी की सरकार आ गई है और हिंदुओं को इस बात की गारंटी मिल गई है की हर प्रकार के कट्टरवाद को कुचल दिया जाएगा। तब हिंदुओं को अपनी इस सरकार पर भरोसा क्यों नहीं करना चाहिए। मेरे विचार से अब दुनिया में हिंदुत्व को कोई खतरा नहीं है अब हिंदुत्व विचारो के आधार पर दुनिया में अपने पैर फैला सकता है। अपने विचारों को बढ़ा सकता है तो ऐसी स्थिति में जब हिंदुत्व को विस्तार का अवसर प्राप्त हो रहा है तब उसे कट्टरवादी दिशा में जाना पूरी तरह गलत है।

6: 14 दिसम्बर 2023 की रात 8:00 बजे जूम पर जो चर्चा आयोजित की गई इसका मुख्य विषय यह था कि व्यक्ति के स्वभाव में स्वार्थ और भ्रष्टाचार क्यों बढ़ रहा है। यह बात भी सामने आई कि व्यक्ति की नियत खराब नहीं है बल्कि जब किसी व्यक्ति को पावर मिलता है तब उस पावर का दुरुपयोग भ्रष्टाचार के रूप में सामने आता है। एक प्राइवेट स्कूल में काम कर रहा शिक्षक जिसे ₹6000 महीने मिलता है वहीं यदि किसी तरह जुगाड़ करके सरकारी स्कूल का शिक्षक बन जाए तो उसका वेतन 50000 हो जाता है और उतना वेतन मिलने के बाद भी वह काम के समय कम कर देता है साथ ही भ्रष्टाचार भी शुरू कर देता है। इससे यह सिद्ध होता है कि पावर जहां भी इकट्ठा होगा उससे भ्रष्टाचार के अवसर बढ़ रहे हैं। व्यक्ति का चरित्र नहीं गिर रहा है बल्कि पावर व्यक्ति के चरित्र को गिरने में मदद कर रहा है। इसलिए यदि हम भ्रष्टाचार को रोकना चाहते हैं तो पावर को कहीं इकट्ठा मत होने दीजिए अर्थात जितना हो सके निजीकरण कर दीजिए। जहां भी निजीकरण है वहां कोई भ्रष्टाचार नहीं है,

भ्रष्टाचार तो सिर्फ सरकारी विभागों में ही है इसलिए अंत में यह सहमति बनी कि भ्रष्टाचार को कम करने का सबसे सहज उपाय निजीकरण है। कल की चर्चा में 13 विद्वानों ने हिस्सा लिया।

7: 15 दिसम्बर 2023 जूम पर बैठकर इस विषय पर महत्वपूर्ण चर्चा हुई कि हमारी अव्यवस्था के लिए जो सरकार दोषी है वह कौन है? कार्यपालिका है, विधायिका है या न्यायपालिका है। आमतौर पर विधायिका कार्यपालिका को सरकार घोषित कर देती है और समाज में एक धारणा फैला गई है कि कार्यपालिका ही सरकार है| जबकि यह बात सरासर झूठ है। सच बात यह है कि कार्यपालिका विधायिका और न्यायपालिका तीनों का समन्वित स्वरूप ही सरकार है। इसका मतलब यह है कि हमारी अव्यवस्था के लिए तीनों का मिला-जुला स्वरूप ही दोषी है कोई एक नहीं। विधायिका कार्यपालिका पर डालकर, कार्यपालिका न्यायपालिका पर डालकर अपना पिंड नहीं छुड़ा सकती क्योंकि आम जनता ने संविधान को पावर दिया है और संविधान ने इन तीनों के अधिकारों का विभाजन किया है। अप्रत्यक्ष रूप से तो सारी असफलता संविधान की मानी जाएगी लेकिन संविधान भी गुलाम है| इसलिए हम सारी असफलता का दोष पूरे तंत्र को दे सकते हैं, तीनों मिलकर सरकार चला रहे हैं। इस विषय पर करीब एक घंटे तक चर्चा हुई प्रश्न उत्तर भी हुए और यह बात महसूस की गई कि हमें तीनों को अलग-अलग दोषी ठहराने की बजाय सम्मिलित रूप से जिम्मेदारी तय करनी चाहिए। यह निर्णय हुआ कि तंत्र ही हमारी सरकार है कोई एक इकाई नहीं और पूरा का पूरा तंत्र ही हमारी अव्यवस्था के लिए जिम्मेदार है।

8: 16 दिसम्बर 2023 रात 8:00 बजे जूम पर इस विषय पर गंभीर चर्चा हुई कि वर्तमान दुनिया में दो प्रकार की अर्थव्यवस्थाएं चल रही हैं, एक है राज्य संरक्षित और दूसरी है राज्य नियंत्रित। राज्य संरक्षित को हम पूंजीवाद कहते हैं और राज्य नियंत्रित को साम्यवाद, लेकिन हमारे विचार से दोनों ही व्यवस्था गलत है| अर्थव्यवस्था को राज्य मुक्त होना चाहिए ना राज्य का नियंत्रण और ना राज्य का संरक्षण होना चाहिए। वर्तमान समय में भारत में राज्य संरक्षित व्यवस्था चल रही है, जिसे हम पूंजीवाद कहते हैं| इस पूंजीवाद में भी राज्य का अर्थव्यवस्था में बहुत हस्तक्षेप है किंतु पूर्ण नियंत्रण नहीं है| हमारे विचार से राज्य जितना हस्तक्षेप कर रहा है उतना भी हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए। हम वर्ण व्यवस्था में मार्गदर्शन रक्षक पालक और सेवक चारों का संतुलन मानते हैं। इसका अर्थ यह हुआ कि धर्म राज्य अर्थ और श्रम चारों का अपना स्वतंत्र अस्तित्व रहना चाहिए। वर्तमान भारत में राज्य ने अन्य तीनों को निगल लिया है, जो उचित नहीं है। इसलिए मेरे विचार से अर्थव्यवस्था को पूरी तरह स्वतंत्र करने की दिशा में कार्य करने की आवश्यकता है।

ZOOM पर ज्ञान चर्चा कार्यक्रम

(ज्ञानत्तव पाक्षिक 1 जनवरी से 15 जनवरी 2024)

हमारी संस्था कोई प्रवचन नहीं देती, हम कोई उपदेश भी नहीं देते, हम तो विभिन्न सामाजिक राजनीतिक आर्थिक विषयों पर विचार मंथन करते हैं। यदि आप मुझसे कुछ प्रत्यक्ष बात करना चाहे अथवा आप कभी इस विचार मंथन से जुड़ना चाहे तो आप अपना फोन नंबर डाल दीजिए, आपको कार्यक्रम की सूचना प्रतिदिन व्हाट्सएप पर मिल जाएगी। प्रतिदिन रात को 8:00 बजे हम लोग एक साथ बैठकर आधे घंटे तक जूम पर प्रत्यक्ष विचार मंथन करते हैं। इस विचार मंथन का आपको एक लाभ अवश्य होगा कि आप यदि कभी-कभी इस विचार मंथन से जटते रहेंगे तो आपकी तर्क शक्ति इतनी अधिक बढ़ जाएगी कि आप जीवन में किसी से भी जल्दी ठगे नहीं जाएंगे यही हमारे विचार मंथन की उपलब्धि है। मैं चाहता हूं कि आप समय निकालकर इस कार्यक्रम से जुड़े। आप अपना फोन नंबर लिख दे जिससे हम व्हाट्सएप पर आपको सूचना देते रहें।

मैंने कल एक पोस्ट लिखी थी, कई लोगों ने अपने नंबर दिए हैं और भी नंबर आ सकते हैं। मैं सबको अपने कार्यालय से जोड़ दूंगा और सबको सूचना मिलती रहेगी। मेरे एक मित्र दयाराम मुद्गल जी ने सुझाव दिया कि तर्क शक्ति की जगह समझदारी शब्द प्रयुक्त होता तो ज्यादा प्रभावकारी होता। मैं भी समझता हूं कि उनका सुझाव सही है। सच बात यही है कि इस कार्यक्रम से यदि आप जुड़ते हैं तो आपकी समझ विकसित होगी क्योंकि इस कार्यक्रम के माध्यम से आप मानसिक व्यायाम करते हैं। समाज में यह बात आमतौर पर पाई जा रही है कि यदि कोई एक व्यक्ति अपनी बात हमारे सामने रखता है तो हमें उसकी बात भी बिल्कुल ठीक लगती है और उसका विरोधी व्यक्ति भी अगर अपनी बात रखता है उसकी भी बात हमें ठीक लगती है। हम नीर-छीर विवेक नहीं कर पाते हैं। लेकिन यदि आप मानसिक व्यायाम करते रहेंगे तो आप सही और गलत को बहुत आसानी से पहचान सकेंगे। इसलिए हम लोगों ने ज्ञानयज्ञ परिवार के नाम से रामानुजगंज कार्यालय से यह विचार मंथन का कार्य शुरू किया है। इसका संचालन हमारे मित्र ज्ञानेंद्र आर्य जी करते हैं और प्रतिदिन रविवार को छोड़कर, किसी एक पूर्व घोषित विषय पर खुली चर्चा आयोजित की जाती है। इसमें विचार मंथन होता है विचार प्रचार नहीं। इसलिए मेरा आपसे निवेदन है कि आप इस कार्यक्रम से जुड़े जिससे आपकी समझदारी बढ़े। कल इस विषय पर और चर्चा करके हम लोग इस चर्चा को समाप्त करेंगे।

रविवार को छोड़कर प्रतिदिन आप चाहे तो जुड़ सकते हैं अथवा आप जब भी समझे आपको जुड़ने की स्वतंत्रता है। रात 8:00 बजे के पूर्व हमारा कार्यालय आपको प्रतिदिन लिंक भेज देगा इस संबंध में यदि और कोई सुझाव आपका हो तो लिखने की कृपा करें या आप जूम पर भी बता सकते हैं।

ZOOM ID: 920 511 3578

भावी भारत का संविधान सहयोग राशि ₹50	वर्तमान संविधान की खामियों एवं उसके निराकरण का सुंदर विश्लेषण करती, देशभर के तमाम विद्वानों एवं बुद्धिजीवियों के साथ निरंतर 20 वर्षों तक शोध के उपरांत लिखी इस पुस्तक की लोकप्रियता का अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि अब तक तीन बार इसे अलग–अलग संस्थानों के द्वारा छपवाया जा चुका है।
मुनि मंथन निष्कर्ष सहयोग राशि ₹50	श्रद्धेय मुनि जी के 70 वर्षों तक देशभर के मूर्धन्य विद्वानों एवं सामाजिक कार्यकर्ताओं के साथ निरंतर 'विचार मंथन' के निष्कर्षों को सूत्र रूप में समेटे, इस पुस्तक को तैयार होने के बाद भी 4 वर्षों तक इसमें संकलित सिद्धांतों पर देशव्यापी विमर्श के उपरांत यह पुस्तक आपके सामने आ पाई है।
मौलिक व्यवस्था का विचार सहयोग राशि ₹50	यह पुस्तक 'व्यवस्था' पर तमाम वैश्विक संदर्भों के आधार पर गहन विश्लेषण प्रस्तुत करती है। समाज के प्रत्येक इकाई के स्वतंत्रता सुरक्षा के साथ पोषण की गारंटी पर एक रिसर्च मॉडल के रूप में है यह पुस्तक है।
बस अब बहुत हो चुका सहयोग राशि ₹50	व्यवस्था की खामियों एवं उसके समाधान के लिए आवश्यक प्रभावी विचार एवं उद्दीपक ऊर्जा को अपने में समेटे इस पुस्तक को लिखा है अशोक गाड़िया जी ने। यह पुस्तक 'व्यवस्था परिवर्तन' के वैचारिक पृष्ठभूमि को तैयार करती है।
मुनि मंथन सहयोग राशि ₹10	श्रद्धेय मुनि जी के विचारों को गागर में सागर सा अपने में समेटे सीधे सरल समझ में आने वाली शैली में लिखी यह पुस्तक, एक रंगकर्मी निर्देशक निर्माता एवं लेखक आनंद गुप्ता जी की रचना है। शराफत से समझदारी की ओर जाने वाले मार्ग का पथ प्रदर्शक के रूप में या पुस्तक पठनीय है।
रामानुजगंज एक आवाज सहयोग राशि ₹10	अपने में श्रद्धेय बजरंग मुनि जी के जीवन की झलक समेटे इस पुस्तक को श्री नरेंद्र जी ने नाटक की शैली में लिखा है। सामाजिक समस्याओं एवं उसके निराकरण पर पात्रों के माध्यम से यथार्थ को नए रंग रोगन में प्रस्तुत करती है यह पुस्तक।
एक ही रास्ता सहयोग राशि ₹10	नुक्कड़ नाटक गीत संगीत जैसे सांस्कृतिक विधाओं से लोगों को समझदार बनने की प्रेरणा देने के लिए मुनि जी ने अपनी युवावस्था से ही प्रयास शुरू कर दिए थे। उन तमाम गीतों एवं दृश्यों को नाटक के रूप में इस पुस्तक में लिपिबद्ध किया गया है।

इन पुस्तकों का एक सेट मंगाने के लिए मात्र ₹100 का आर्थिक सहयोग और अतिरिक्त डाक खर्च देना होगा। इन पुस्तकों को एक साथ मंगाने के लिए सम्पर्क करें–8318621282, 7869250001, 9617079344

हमारी संस्थाएँ

■ मार्गदर्शक समाजिक शोध संस्थान ■ ज्ञानयज्ञ परिवार

संस्थान के कार्य ■ समाज विज्ञान पर विश्वव्यापी रिसर्च तथा निष्कर्ष निकालना।

परिवार का कार्य

■ देश भर में ज्ञान केन्द्रो का इस तरह विस्तार हो कि वहाँ स्वतंत्र विचार मंथन हो तथा संवाद प्रणाली विकसित हो।

कार्यक्रम

■ ज्ञान चर्चा –प्रतिदिन शाम साढ़े आठ से साढ़े नौ बजे तक किसी एक पूर्व घोषित विषय पर स्वतंत्र वेबिनार।

■ महायज्ञ – वर्ष में एक बार या दो बार बड़े सामुहिक यज्ञ का आयोजन।

■ मार्गदर्शक मंडल – ऐसे न्यूनतम पाँच सौ लोगों की टीम तैयार करना जो समाज विज्ञान पर रिसर्च करने की क्षमता रखते हैं।

■ ज्ञान कुंभः– वर्ष मे दो बार पंद्रह-पंद्रह दिनो के ज्ञान कुंभ जिसमें मार्गदर्शक मंडल के लोग स्वतंत्र विचार द्वारा प्रतिदिन दो-दो विषयों पर निष्कर्ष निकाल कर समाज को दें।

माध्यम

- ज्ञान तत्व पाक्षिक पत्रिका
- यू टयूब चैनल
- फेसबुक एप से प्रसारण
- इंस्टाग्राम
- वॉट्सऐप ग्रुप से प्रसारण
- टेलीग्राम
- जूम एप पर वेबिनार
- कू एप

ज्ञानतत्व पाक्षिक पत्रिका का माह में दो प्रति का प्रकाशन सुचारू रूप से होना शुरू हो गया है इसकी सहयोग राशि रू. 100/- वार्षिक अभी तय किया गया है लेख प्रस्तुती आदि पर सुझाव अवश्य दें

पंजीकृत पाक्षिक
पंजीकरण क्रमांक–68939/98

डाक पंजीयन क्रमांक–छ.ग./रायगढ़/10/209–2021

प्रति,

श्री/श्रीमती _____

_____

_____

_____

संदेश

वर्तमान संसदीय लोकतंत्र में तो संसद एक जेल खाना है। जहां हमारा भगवान रूपी संविधान कैद है। भगवान को जेलखाने से मुक्त कराना हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता है। संसदीय लोकतंत्र को सहभागी लोकतंत्र में बदलना ही होगा। लोक संसद के लिये आंदोलन इसका प्रारंभिक चरण है। लोक स्वराज्य मंच ने इसकी पहल की है। लोक स्वराज्य मंच से जुड़िये और अपने भगवान को जेलखाने से मुक्त कराने की पहल कीजिए।

पत्र व्यवहार का पता

पता - बजरंग लाल अग्रवाल पोस्ट बॉक्स 15, रायपुर (छ.ग.) 492021
website : www.margdarshak.info

प्रकाशक, सम्पादक व स्वामी - बजरंगलाल
09617079344
Email : bajrang.muni@gmail.com
Support@margdarsgak.info
Facebook Id : **बजरंग मुनि** (User Name)

मुद्रक- माया प्रेस रामानुजगंज, सरगुजा (छ.ग.)